शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

शैतान के रहस्य

कलीसिया में उसकी छिपी हुई युक्तियों को पहचानना

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जिन सात कलीसियाओं का उल्लेख है, उनमें थुआतीरा की कलीसिया एक अनोखे और आश्चर्यजनक रूप में सामने आती है। अन्य कई कलीसियाओं के विपरीत, इस कलीसिया को उसके निरंतर आत्मिक विकास के लिए प्रभु यीशु से प्रशंसा मिली। वह प्रेम, विश्वास, सेवा और धैर्य में बढ़ रही थी। स्वयं मसीह ने कहा:

“मैं तेरे कामों, तेरे प्रेम, विश्वास, सेवा और धीरज को
जानता हूँ, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहले से बढ़कर हैं।” (प्रकाशितवाक्य 2:19)

यह एक शक्तिशाली प्रशंसा थी। जहाँ अन्य कलीसियाएँ गिर रही थीं, वहीं थुआतीरा आगे बढ़ रही थी। लेकिन यही प्रगति शत्रु का ध्यान आकर्षित कर बैठी। शैतान ने इस कलीसिया पर केवल खुले उत्पीड़न या नैतिक पतन के द्वारा आक्रमण नहीं किया। इसके बजाय उसने एक अधिक खतरनाक तरीका अपनाया: आत्मिक रहस्यों के द्वारा धोखा।

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

शैतान ने छिपे हुए जाल बिछाए—सूक्ष्म और आत्मिक दिखने वाले—ताकि कलीसिया में प्रवेश कर सके। उसने अपनी चालों को इतनी अच्छी तरह छिपाया कि कुछ विश्वासियों को लगा कि वे अभी भी परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं, जबकि वास्तव में वे शत्रु के साथ जुड़ रहे थे। यही वह है जिसे यीशु ने “शैतान की गहरी बातें” कहा।

“…जैसा कि वे कहते हैं, शैतान की गहरी बातें, जिन्हें तुमने नहीं जाना…”
(प्रकाशितवाक्य 2:24)

आइए हम शैतान के कुछ आत्मिक रहस्यों को उजागर करें—वे धोखेबाज़ युक्तियाँ जिन्हें वह आज भी उपयोग करता है—ताकि हम दृढ़ खड़े रहें और उसके जाल में न फँसें।

1. शैतान चाहता है कि हम विश्वास करें कि वह सत्य नहीं बोल सकता

हम अक्सर मान लेते हैं कि शैतान जो कुछ भी कहता है वह झूठ ही होगा। यद्यपि वह वास्तव में “झूठ का पिता” है, फिर भी वह कभी-कभी सत्य का उपयोग धोखा देने के लिए करता है—प्रकाश देने के लिए नहीं, बल्कि फँसाने के लिए।

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“तुम अपने पिता शैतान से हो… वह झूठा है और झूठ का पिता है।” (यूहन्ना 8:44)

प्रेरितों के काम 16:16–18 में, जब प्रेरित पौलुस फिलिप्पी में सेवा कर रहे थे, एक दासी जिसमें भविष्य बताने वाली आत्मा थी, उनके पीछे-पीछे चलकर पुकारने लगी:

“ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो तुम्हें
उद्धार का मार्ग बताते हैं!”

यह कथन सत्य था। परंतु उस आत्मा का उद्देश्य सुसमाचार का समर्थन करना नहीं था, बल्कि चुपके से पौलुस की सेवा से जुड़कर उसके विवेक को कमज़ोर करना था।

अंततः पौलुस ने उस धोखे को पहचान लिया:

“पौलुस बहुत खिन्न हुआ और मुड़कर उस आत्मा से कहा, ‘मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ, इसमें से निकल जा।’ और

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

वह उसी घड़ी निकल गई।”
(प्रेरितों के काम 16:18)

अनुप्रयोग: केवल इसलिए कि कोई बात सच लगती है, इसका अर्थ यह नहीं कि वह परमेश्वर की ओर से है। हर प्रकाशन, दर्शन या भविष्यवाणी—even यदि वह आपके जीवन का सही वर्णन करे—पवित्र आत्मा से नहीं होती। सही स्रोत और फल के बिना सत्य भी एक जाल बन सकता है।

“तुम उन्हें उनके फलों से पहचानोगे।”
(मत्ती 7:16)

“हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, पर आत्माओं को
परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं।”
(1 यूहन्ना 4:1)

2. शैतान चाहता है कि हम विश्वास करें कि वह कलीसिया में उपस्थित नहीं हो सकता

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

बहुत से विश्वासी गलत मान लेते हैं कि शैतान केवल कलीसिया के बाहर ही काम करता है। लेकिन प्रकाशितवाक्य 2:20 इस झूठ को उजागर करता है। यीशु थुआतीरा की कलीसिया को डाँटते हुए कहते हैं:

“मुझे तुझ से यह शिकायत है कि तू उस स्त्री ईज़ेबेल को रहने देता है, जो अपने आप को भविष्यद्वक्त्री कहती है और मेरे
दासों को व्यभिचार करने और मूर्तियों के आगे चढ़ाए हुए
वस्तु खाने की शिक्षा देकर बहकाती है।”
(प्रकाशितवाक्य 2:20)

यह “ईज़ेबेल” कोई बाहरी व्यक्ति नहीं थी—वह कलीसिया के भीतर थी और संभवतः एक सम्मानित व्यक्ति थी। फिर भी वह झूठी शिक्षा ला रही थी और आत्मिकता के नाम पर विश्वासियों को भटका रही थी।

अनुप्रयोग: सच्चे और बढ़ते हुए विश्वासी भी गुमराह हो सकते हैं यदि वे हर आत्मिक अगुवे पर आँख मूँदकर भरोसा करें। केवल इसलिए कि कोई मंच के पीछे खड़ा है या उसके पास कोई पद है, इसका मतलब यह नहीं कि उसका संदेश पवित्रशास्त्र के अनुरूप है।

“ये लोग अधिक उदार मन के थे… वे बड़े उत्साह से वचन को ग्रहण करते और प्रतिदिन पवित्रशास्त्र में जाँचते थे कि ये बातें

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

सच हैं या नहीं।”
(प्रेरितों के काम 17:11)

3. शैतान चाहता है कि हम उसे केवल डरावना या दुष्ट रूप में ही देखें

कई लोगों के मन में शैतान की छवि सींगों, लाल त्वचा और त्रिशूल वाले एक भयानक प्राणी के रूप में होती है। लेकिन यह वास्तविकता से बहुत दूर है।

“और कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान आप ही ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।”
(2 कुरिन्थियों 11:14)

पतन से पहले वह एक सुंदर और सामर्थी स्वर्गदूत था।

“तू रूप की मुहर, बुद्धि से भरपूर और सौंदर्य में सिद्ध था… जब तक कि तुझ में अधर्म न पाया गया।”
(यहेजकेल 28:12–17)

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

जब शैतान ने जंगल में यीशु की परीक्षा ली, तो वह भयावह रूप में नहीं आया—वह संसार के राज्य देने का प्रस्ताव लेकर आया।

“फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और संसार के
सारे राज्य और उनका वैभव दिखाकर कहा, ‘यदि तू गिरकर मुझे
प्रणाम करे, तो यह सब मैं तुझे दे दूँगा।’”
(मत्ती 4:8–9)

अनुप्रयोग: हर खुला हुआ द्वार या सफलता परमेश्वर से नहीं होती। हर शांति का क्षण दिव्य शांति नहीं होता। शैतान सांसारिक आशीषों का उपयोग करके आपको आत्मिक समझौते में फँसा सकता है। विवेक आवश्यक है। केवल यह न पूछें, “क्या यह अच्छा है?” बल्कि यह भी पूछें, “क्या यह परमेश्वर से है?”

4. शैतान चाहता है कि हम सोचें कि वह परमेश्वर के कार्य का समर्थन नहीं कर सकता

कभी-कभी शैतान ऐसा प्रतीत हो सकता है कि वह परमेश्वर की योजना का समर्थन कर रहा है—लेकिन यह केवल उसमें घुसपैठ करने या उसे पटरी से उतारने की युक्ति होती है।

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

जब यीशु ने अपने चेलों को अपने आने वाले दुख और मृत्यु के बारे में बताया, तो पतरस ने भावुक होकर कहा:

“हे प्रभु, परमेश्वर न करे! यह तुझ पर कभी न हो।”
(मत्ती 16:22)

पतरस के शब्द सुरक्षात्मक लगे, पर यीशु ने वास्तविक स्रोत पहचान लिया:

“हे शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का कारण
है, क्योंकि तू परमेश्वर की नहीं, मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।”
(मत्ती 16:23)

कुछ समय के लिए शैतान ने पतरस की करुणा का उपयोग करके यीशु को उसकी मिशन से रोकने की कोशिश की।

अनुप्रयोग: कभी-कभी शैतान आपकी बुलाहट, सेवा या उद्देश्य का “समर्थन” करेगा—बस इतना कि आपको सही मार्ग से भटका सके। इसलिए

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

आत्मिक चापलूसी और “अच्छे इरादों” वाली सलाह को भी सावधानी से परखना चाहिए।

5. शैतान चाहता है कि हम विश्वास करें कि वह कमजोर होने का दिखावा नहीं कर सकता

कभी-कभी शत्रु विरोध करके नहीं, बल्कि पराजित या विनम्र होने का नाटक करके आगे बढ़ता है।

यहोशू 9 में गिबोनियों ने इस्राएल को धोखा दिया, यह दिखावा करते हुए कि वे दूर देश से आए हैं और शांति चाहते हैं। यहोशू ने परमेश्वर से पूछे बिना उनसे वाचा बाँध ली।

“तब उन लोगों ने उनकी भोजन सामग्री ले ली, परन्तु यहोवा से सम्मति न ली। और यहोशू ने उनसे मेल करके उनके साथ वाचा
बाँधी…”
(यहोशू 9:14–15)

अनुप्रयोग: शैतान आपकी प्रशंसा कर सकता है, पीछे हटने का नाटक कर सकता है, या ऐसा दिखा सकता है कि वह कोई खतरा नहीं है—सिर्फ आपकी सतर्कता कम करने के लिए। सच्चा विवेक पवित्र आत्मा पर

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 10

निरंतर निर्भरता माँगता है, न कि केवल अपनी समझ पर।

एक अंतिम संदेश: क्या आप आत्मिक रूप से जागृत हैं?

ये अंतिम दिन हैं। शत्रु जानता है कि उसका समय कम है, इसलिए वह धोखा देने, भटकाने और नष्ट करने के लिए पूरी ताकत लगा रहा है। इसलिए पौलुस हमें चेतावनी देता है:

“ताकि हम शैतान से ठगे न जाएँ, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं हैं।”
(2 कुरिन्थियों 2:11)

तो प्रश्न यह है: क्या आप उद्धार पाए हुए हैं? यदि आज मसीह लौट आएँ, तो क्या आप उनके साथ उठाए जाएँगे या पीछे रह जाएँगे?

“मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।”
(यूहन्ना 14:6)

शैतान के रहस्य

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 11

कोई भी बाहरी धार्मिकता, धार्मिक गतिविधि या कलीसिया में उपस्थित होना मसीह के साथ वास्तविक संबंध का स्थान नहीं ले सकता। यदि आपने अभी तक अपने पापों से मन फिराकर अपना जीवन यीशु को नहीं दिया है—तो आज ही वह दिन है।

मन फिराओ। विश्वास करो। उसका अनुसरण करो।
और प्रकाश में चलो, शत्रु की युक्तियों के प्रति पूरी तरह जागरूक रहते हुए।

प्रभु आपको आशीष दें और आपको सत्य में स्थिर बनाए रखें।

I’m

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp